



अभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 19, जनवरी-फरवरी 2023

मार्गदर्शक संजीव कुमार, मंडल रेल प्रबंधक	मुख्य संपादक लोकेश विश्नीई, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी	संपादक निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी	उप संपादक मनोज कुमार साहू वरिष्ठ अनुवादक
--	---	---	--

माननीय सांसदों के साथ महाप्रबंधक, द.पू.म.रेलवे की बैठक का आयोजन

दिनांक 12.01.2023 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर मंडल के अंतर्गत आने वाले संसदीय क्षेत्रों के माननीय सांसदों के साथ महाप्रबंधक, द.पू.म.रेलवे की बैठक का सफल आयोजन किया गया। बैठक मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर कार्यालय स्थित सभाकक्ष में हुई जिसकी अध्यक्षता श्री विजय बघेल, माननीय सांसद सदस्य, दुर्ग द्वारा किया गया।

बैठक के दौरान श्री मोहन मंडावी, माननीय सांसद, कांकेर, श्रीमती फूलो देवी नेताम, माननीया राज्यसभा सांसद सहित विभिन्न सांसदों के प्रतिनिधिगण, विभिन्न विभागों के प्रधान विभागाध्यक्ष,



मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर तथा मंडल के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बैठक के प्रारंभ में महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे श्री आलोक कुमार ने उपस्थित सांसदों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सभी के मार्गदर्शन और बहुमूल्य सुझावों के ही परिणाम है कि हम अपनी सेवाओं को निरंतर बेहतर से बेहतर करने में सफल हो रहे हैं। यात्री सुविधाओं तथा रेल विकास से संबंधित मुद्दों पर आगे भी आपसे जो सुझाव प्राप्त होंगे, उन्हें अवश्य क्रियान्वित किया जाएगा।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक रायपुर श्री संजीव कुमार द्वारा माननीय सांसद सदस्यों के समक्ष दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की यात्री सुविधाओं एवं उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात उन्होंने रायपुर मंडल में चल रहे अधोसंरचना, यात्री सुविधाओं एवं अन्य विकासात्मक कार्यों से भी माननीय सांसदों को अवगत कराया।

बैठक के दौरान माननीय सांसदों द्वारा महाप्रबंधक एवं रेलवे के अधिकारियों के साथ रेल एवं विभिन्न यात्री सुविधाओं के विकास पर विस्तार से चर्चा की गई। महाप्रबंधक महोदय ने बैठक में उठाए गए मुद्दों एवं सुझावों को प्राथमिकता के साथ पूरा करने के प्रति सभी को आश्वासित किया।

बैठक के अंत में उप- महाप्रबंधक (सामान्य) श्री तन्मय महेश्वरी द्वारा उपस्थित सांसदों के प्रति आभार व्यक्त करने के साथ-साथ सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

74वां गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल के सेकरसा ग्राउंड, डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी में 74वां गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री संजीव कुमार, मंडल रेल प्रबंधक ने सर्वप्रथम मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री संजय कुमार गुप्ता की अगुवाई में राष्ट्रीय ध्वज फहराई गई। तदुपरांत उन्होंने रेल सुरक्षा बल के जवानों एवं सिविल डिफेन्स द्वारा प्रस्तुत आकर्षक परेड का निरीक्षण किया एवं उसकी सलामी भी ली।



मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार ने ध्वजारोहण के पश्चात उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए सर्वप्रथम उन्हें 74वें गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दीं। आगे उन्होंने कहा कि रायपुर मंडल का भारतीय रेलवे में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी स्थापना के बाद से ही इस मंडल ने हर क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह मंडल लदान, विद्युतीकरण, लाइन दोहरीकरण, यात्री सुविधाओं, स्वच्छता,

इन्फ्रास्ट्रक्चर, यात्रियों की सुरक्षा, स्टाफ वेलफेयर के कार्यों एवं यात्री परिवहन आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय कार्य करता रहा है। इस संबंध में उनके द्वारा मंडल की उपलब्धियों एवं गतिविधियों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार एवं अध्यक्ष, सेक्रो श्रीमती मेघा एस. कुमार द्वारा अनेकता में एकता का प्रतीक रंग-बिरंगे गुब्बारे एवं शांति के प्रतीक श्वेत कबूतर भी आकाश में छोड़े गए। समारोह के दौरान अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्वाई एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रास्ट्रक्चर) श्री आशीष मिश्रा सहित सेक्रो के पदाधिकारीगण, मंडल के अधिकारीगण, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर के यूनियन के प्रतिनिधिगण, मीडिया के सदस्य एवं रेल कर्मियों के परिजन भी उपस्थित भी रहे। गणतंत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री उदय कुमार भारती द्वारा किया गया।



गणतंत्र दिवस समारोह पर सेक्रो, रायपुर के कार्यक्रम

74वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर रायपुर मंडल के दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी, रायपुर में संचालित टाइनी टॉट स्कूल -1 एवं टाइनी टॉट स्कूल - 2 में अध्यक्ष / सेक्रो श्रीमती मेघा एस. कुमार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। साथ ही बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर टाइनी टॉट स्कूल-1 एवं टाइनी टॉट स्कूल-2 तथा आकांक्षा अभिलाषा स्कूल (विशेष बच्चों के स्कूल) की शिक्षिकाओं एवं छात्रों द्वारा सरस्वती वंदना भी गायी गयी।



सरस्वती वंदना के उपरांत छात्रों को फूड पैकेट्स का वितरण किये गये। इस अवसर पर मंडल चिकित्सालय, रायपुर एवं रेलवे चिकित्सालय, बी.एम.वाय. में भी मरीजों को टिफिन बॉक्स, टॉवल एवं फूड पैकेट्स वितरण किये गये।

उपर्युक्त सभी कार्यक्रम सेक्रो अध्यक्ष श्रीमती मेघा एस. कुमार की अध्यक्षता में आयोजित किये गये। श्रीमती सुनीता मिश्रा, उपाध्यक्ष/सेक्रो, श्रीमती इन्द्राणी देवांगन, सचिव/सेक्रो, श्रीमती संचिता बेनर्जी, कोषाध्यक्ष/सेक्रो, श्रीमती शिवानी गुप्ता, सह-सचिव/सेक्रो एवं अन्य सेक्रो सदस्यों की विशेष सहभागिता रही।



- हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। - कमलापति त्रिपाठी
- राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है। - महात्मा गांधी
- समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

‘ जयशंकर प्रसाद ’ की जयंती मनाई गई

दिनांक 30.01.2023 को राजभाषा विभाग, रायपुर द्वारा मंडल कार्यालय स्थित जयशंकर प्रसाद हिंदी पुस्तकालय में हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार ‘ जयशंकर प्रसाद ’ की जयंती मनाई गई । सर्वप्रथम श्री लोकेश विश्नोई, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) ने महाकवि के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की ।



तत्पश्चात श्री प्रवीण कुमार, सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर, श्री निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी एवं विभिन्न विभागों से उपस्थित कर्मचारियों ने भी उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया । इस अवसर पर राजभाषा अधिकारी श्री निकेश कुमार पाण्डेय ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षिप्त प्रकाश डाला और कार्यक्रम के दौरान उपस्थित कर्मचारियों द्वारा उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं का पाठ किया गया । कुछ कर्मचारियों ने अपनी मौलिक रचनाएं पढ़कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की ।

शब्द परिचय : रबड़ी

रबड़ी - खीर की तरह रबड़ी भी दूध से बना एक ऐसा मीठा अर्द्धतरल पदार्थ है जिसका जायका लाजवाब होता है। रबड़ी बनाने के लिए सिर्फ दूध एवं शक्कर की आवश्यकता होती है, साथ ही - आँच और धैर्य। इसीलिए कहते हैं - "सब्र का फल मीठा होता है।"

वैसे रबड़ी स्वाद में नमकीन भी होता है और मीठा भी। रबड़ी जहाँ शहराती व्यंजन बन चुका है वहीं रबड़ी मूलतः खान-पान की लोक संस्कृति में रचा बसा व्यंजन है।

रबड़ी शब्द "राब" से आया है। राब अर्थात् है गन्ने का अधपका रस। राब बना है संस्कृत के 'द्रव' शब्द से। द्रव अर्थात् तरल, रस, पानी, रिसने वाला पदार्थ।

'द्रु' धातु जिसमें भागना, बहना, दौड़ना, तरल होना, रिसना जैसे गतिवाचक भाव हैं। बहाव में गति निहित है। "द्रु" का अर्थ हुआ धारा। सतलज नदी का प्राचीन नाम था "शतद्रु" ।

"शतद्रु > शतद्रु > शतरुद्र > सतरुज > सतलुज > सतलज।" द्रु = शतद्रु अर्थात् सौ धाराएं। पंजाब में इसे सतलुज कहा जाता है। आंचलिकता का फर्क है। रबड़ी या राबड़ी दोनों सही शब्द है। ठीक वैसे ही जैसे 'वैद्य' और 'वैद' दोनों सही है।

संकलनकर्ता - हरीशचंद्र कर
लोको पायलट (गुड्स), रायपुर

हमारे अपने रायपुर के दाऊ कल्याण सिंह

दानवीर दीवान बहादुर दाऊ कल्याणसिंह अग्रवाल जी ।

डी के अस्पताल, एम्स, कृषि महाविद्यालय में 1729 एकड़ जमीन दान ।

अगर ये ना होते तो, राजधानी रायपुर का नक्शा कुछ बदला सा होता। कथा उनकी जिनके सामने आज के उद्योगपति कुछ भी नहीं।

सन 1828 जिला बिलासपुर के ग्राम तरेंगा में उदय हुआ तहुतदारी का, और तहुतदारी के इस जन्म के 48 वर्ष बाद, 4 अप्रैल 1876 को जन्म हुआ दाऊ कल्याण सिंह का । पिता बिसेसरनाथ व माता पार्वती देवी थी । पिता एक छोटे तहुतदार थे । ताहुतदारी को बढ़ाने व राजस्व आय को दृष्टिगत रखते हुए निर्जन स्थानों पर नए गांव बसाकर अपने ताहुतदारी गांवों में वृद्धि की, पर साथ मे कर्ज का बोझ भी बढ़ा लिया । कारोबार ठीक चल ही रहा था कि बिसेसरनाथ की मृत्यु हो गई, सन 1903 में और जब पिता की मृत्यु हुई दाऊ तब 27 वर्ष के थे ।



अब कथा शुरू होती है हमारे नायक “दाऊ कल्याण सिंह” की । केवल 27 वर्ष की आयु में सारे कारोबार का भार दाऊ के कंधे पर आया और साथ में आया 2 लाख 12 हजार का कर्ज भी । इस कर्ज के एवज में तरेंगा की उनकी संपत्ति जबलपुर के सेठ गोकुलदास के पास गिरवी थी । दाऊ की पढाई तरेंगा ग्राम में ही हुई पर प्रबन्ध कौशल किसी शहर वाले से भी तेज था । कारोबार हाथ में लेते ही अपने सूझ बूझ और प्रबंध कौशल से सारा कर्ज जल्द ही उतार फेंका और अपने क्षेत्र में ऐसा विकास किया कि ताहुतदारी की वार्षिक आय तीन लाख तक पहुंच गई । कारोबार में बढ़ोतरी अब ऐसी थी कि सन 1937 में “दाऊ कल्याण सिंह” ने 70 हजार रुपये से अधिक का राजस्व पटाया । इन आंकड़ों से उनका परिश्रम और प्रबंधन कौशल दोनों झलकता है । दाऊ के मुकाबले आज के उद्योगपति कुछ भी नहीं ।

दाऊ केवल कमाने के लिए मशहूर नहीं थे, दाऊ प्रेमभाव से अपनी संपत्ति लोगों में बाटने के लिए भी मशहूर थे । छत्तीसगढ़ के इतिहास में इनसे बड़ा दानी शायद ही आपको कोई और मिलेगा । राज्य का पुराना मंत्रालय भवन याद होगा ना आपको ? घड़ी चौक के समीप जहाँ पहले पूरा प्रशासनिक अमला उस भवन की छांव में रहा करता था । छत्तीसगढ़ शासन का मंत्रालय जिस भवन में स्थापित था, वह पहले चिकित्सा सुविधाओं से परिपूर्ण भव्य डीके अस्पताल (दाऊ कल्याण सिंह चिकित्सालय) हुआ करता था। अस्पताल के निर्माण के लिए दाऊ कल्याण सिंह ने सन् 1944 में एक लाख पच्चीस हजार रुपये दान में दिये थे । उस समय की उस राशि का वर्तमान समय में यदि आकलन किया जाए तो लगभग सत्तर करोड़ रुपये होते हैं। वह छत्तीसगढ़ में एकमात्र आधुनिक चिकित्सा का केन्द्र था । प्रदेश के दूर-दूर गांव व शहर से लोग निःशुल्क चिकित्सा के लिए इस अस्पताल में आया करते थे।

दान के रूप में दाऊ के कल्याणकारी कार्यों की सूची लंबी है, रायपुर के लभांडी में कृषि महाविद्यालय हेतु कृषि प्रायोगिक फार्म के लिये 1729 एकड़ भूमि तथा 1 लाख 12 हजार रुपए नगद उन्होंने दान किये थे । रायपुर में ही 323 एकड़ भूमि क्षयग्रस्त रोगियों के आयोग्य धाम निर्माण हेतु दान। रायपुर स्थित एक प्रसूत चिकित्सालय में कई कमरों का निर्माण । रायपुर के पुरानी बस्ती स्थित टुरी हटरी में जगन्नाथ के प्राचीन मंदिर को खैरा नामक पूरा गांव दान में चढ़ा दिया था । ये सारे कुछ ही उदाहरण थे उनकी दानवीरता के । इसलिए दाऊ नहीं होते तो रायपुर का नक्शा ही कुछ और होता ।

उन्होंने केवल रायपुर ही नहीं बल्कि प्रदेश व देश के अनेक स्थानों पर अपनी महानता की छाप छोड़ी है, सन 1921 के भयंकर अकाल के समय, पीड़ितों की सहायता के लिए भाटापारा में लाखों रुपये खर्च कर एक बड़े जलाशय का निर्माण करवाया, जिसे आज लोग कल्याण सागर जलाशय के नाम से जानते हैं। भाटापारा में ही उनके द्वारा मवेशी अस्पताल, धर्मशाला तथा पुस्तकालय का निर्माण भी करवाया गया था। दाऊ की उदारता प्रदेश की सीमा में कैद नहीं रही, नागपुर स्थित लेडी डफरिन अस्पताल तथा सेंट्रल महिला महाविद्यालय का निर्माण संभव नहीं हो पाता अगर दाऊ कल्याण सिंह प्रचुर मात्रा में दान राशि उपलब्ध ना कराते। बिहार के भूकंप का समय हो या वर्धा में बाढ़ का, या उनकी पहुँच वाले क्षेत्र में कोई अकाल, इन सभी प्राकृतिक आपदाओं के समय में दाऊ अपने कोष का मुँह खोल दिया करते थे।

दाऊ को लोग कट्टर हिन्दू माना करते थे, लेकिन जब दाऊ दान करते तब दानधर्म ही उनके लिए सबसे बड़ा धर्म बन जाता था। उन्होंने धर्म, जाति, या वर्ण से कभी कोई भेदभाव नहीं किया। उन्होंने मंदिर, मस्जिद, चर्च सभी के लिए भूमि उपलब्ध कराई। बाजार, कांजीहाउस, शासकीय कार्यालय भवन, स्कूल, गौशाला, शमशान, सड़क, पुस्तकालय, तालाब आदि अनेक कार्यों के लिये न केवल भूमि मुहैया कराई वरन नगद राशि भी दान की। दाऊ के दान के कई किस्से हैं, सारे किस्से पिरोने बैठें तो ना जाने कितने शब्द ढूँढने पड़ें।

दाऊ का छत्तीसगढ़ के लिये जितना प्यार था, हम उन्हें उसका आधा भी नहीं दे पाए। आज दाऊ को लोग भूल चुके हैं। न तो किसी मंच से उनका नाम सुनाई देता है, और न ही कोई उनकी कहानियां सुनता है। बाहरी किस्सों की भीड़ में अपने नायक के किस्से लोगों को पता ही नहीं।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल ऐसे महानायकों का पता लगाने और उन्हें यथोचित सम्मान देने में भी सदैव सजग एवं तत्पर रहता है।

संकलनकर्ता - लोकेश विश्नोई
अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

व्यंग्य

दवा

कवि 'अनंग' जी का अन्तिम क्षण आ पहुँचा था। डॉक्टरों ने कह दिया कि ये अधिक से अधिक घंटे भर के मेहमान हैं। अनंग जी की पत्नी ने कहा - "कुछ ऐसी दवा दे दें जिससे ये 5-6 घंटे जीवित रहें ताकि शाम की गाड़ी से आने वाले बेटे से मिल लें।

डॉक्टरों ने कहा - कोई भी दवा इन्हें घंटे भर से अधिक जीवित नहीं रख सकती।

इसी समय अनंग जी के एक मित्र आए। उन्होंने कहा - मैं इन्हें 5-6 घंटे जीवित रख सकता हूँ।

डॉक्टरों ने हँसकर कहा - यह असम्भव है।

मित्र ने कहा - खैर! मुझे कोशिश करने दीजिए। आप लोग बाहर जाइए।

सब लोग बाहर चले गए। मित्र अनंग जी के पास बैठे और बोले - "अनंग जी अब तो आप सदा के लिए चले। यह सुललित कण्ठ अब कहाँ सुनने को मिलेगा! जाते-जाते कुछ सुना जाइए।"

यह सुनते ही अनंग जी उठकर बैठ गए और बोले - "मन तो नहीं है पर आपकी प्रार्थना टाली नहीं जा सकती। अच्छा, आलमारी में से मेरी कॉपी निकालिए न!"

मित्र ने कॉपी निकालकर हाथ में दे दी और अनंग जी कविता पाठ करने लगे। घंटे पर घंटे बीत गए। शाम की गाड़ी आ गई और लड़का भी आ गया।

उस कमरे में घुसते ही देखा कि पिताजी कविता पढ़ रहे हैं और उनके मित्र मरे पड़े हैं।

(संकलित)

साभार
~ हरिशंकर परसाई

अथ श्री भारत बायोटेक कथा

तमिलनाडु और तत्कालीन आंध्रप्रदेश के बीच की सीमा पर तिरुथानी नामक एक मंदिर शहर अवस्थित है जो भगवान मुरुगा के छह प्रसिद्ध निवासों में से एक है। कोरोना वायरस की स्वदेशी दवा कोवैक्सीन बनाने वाली कंपनी भारत बायोटेक के संस्थापक डॉ. कृष्णमूर्ति एल्ला का जन्म इसी शहर में साल 1969 में एक मध्यमवर्गीय कृषक माता-पिता के घर में हुआ था। शायद अपनी पृष्ठभूमि के कारण डॉ. कृष्णा कृषि विज्ञान का अध्ययन करना चाहते थे। परंतु उनके पिता खुश नहीं थे, उन्होंने अपने बेटे से कहा "केवल कृषि विज्ञान का अध्ययन करने से कोई किसान नहीं बनता"। पर बेफिक्र स्वभाव एवं जुनून के धनी डॉ. कृष्णा ने बेंगलूर में कृषि विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और एग्रीकल्चर साइंस में ग्रेजुएशन एवं यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई से एम.एस. की डिग्री ली। उन्होंने विश्वविद्यालय में अपनी कड़ी मेहनत से स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। परंतु "साधारण" स्वर्ण पदक विजेताओं की तरह उनकी दिलचस्पी कभी नौकरी पाने की नहीं रही। तथापि वे ग्रेजुएट होने के बाद गुजर बसर करने के लिए बायर फार्मा के कृषि प्रभाग में एक छोटी-मोटी नौकरी करने लगे। पर उनकी तमन्ना इससे कहीं अधिक पाने की थी।



कुछ समय पश्चात उन्हें एक रोटरी छात्रवृत्ति मिली जिससे वे विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के लिए अमेरिका चले गए। इस छात्रवृत्ति से उनके उड़ान को पंख लग गए और फिर उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। उन्हें आणविक जीवविज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त थी। अमेरिका में रहते हुए उनकी मुलाकात अर्थशास्त्र स्नातक सुचित्रा से हुई जिनसे कालांतर में उन्होंने शादी कर ली। सुचित्रा इल्ला 'भारत बायोटेक' की सह-संस्थापक रही हैं।

अमेरिका में रहने वाले औसत भारतीय का सपना होता है अपने लिए ग्रीन कार्ड। पर डॉ. कृष्णा ने वहां रहकर लाखों लोगों के लिए सपना देखा और वह था - 'बीमारियों से मुक्ति और उसका समाधान, अर्थात ध्यान न दी जाने वाली बीमारियों के लिए कम लागत वाली टीका'।

वे चाहते थे कि उनके सपने भारत में हकीकत बनें। इसलिए उन्होंने 1996 में हैदराबाद स्थित नवगठित जीनोम वैली में भारत बायोटेक की स्थापना की जिसका पहला उत्पाद था - सीज़ियम मुक्त हेपेटाइटिस बी वैक्सीन, दुनिया की पहली वैक्सीन। उनके इस काम ने बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन का ध्यान आकर्षित किया, फलतः उनसे प्राप्त फंड से भारत बायोटेक दुनिया में पहली बार रेटावायरस वैक्सीन विकसित करने और टाइफाइड वैक्सीन को संयुग्मित करने में सफल हो पाया।

रोटावायरस वैक्सीन को हकीकत में बदलने में 16 साल लग गए। पश्चिमी दुनिया में रेटावायरस वैक्सीन की कीमत 85 डॉलर है, लेकिन कृष्णा द्वारा इसकी कीमत आश्चर्यजनक रूप से कम कर 1 डॉलर कर दी गई। आज ये टीके 70 देशों में उपलब्ध हैं और डॉ. कृष्णा एवं उनकी टीम के नाम पर 140 पेटेंट हैं।

फिर कोविड आ गया और वैक्सीन के लिए रेस शुरू हो गई। वायरस नया था। कोई निश्चित रूप से यह नहीं जानता था कि क्या काम करेगा और क्या नहीं, बस हर कोई दांव लगा रहा था। इस बीच, दुनिया की सबसे बड़ी वैक्सीन निर्माता कंपनी के अरबपति सीईओ अदार पूनावाला एडेनोवायरस वैक्सीन के निर्माण के लिए ऑक्सफोर्ड और एस्ट्रा के साथ बातचीत कर रहे थे। भारत की आधा दर्जन कंपनियों ने कोशिश की, लेकिन वास्तव में हमारा सामूहिक भाग्य डॉ. कृष्णा एवं अदार पूनावाला - इन दो व्यक्तियों पर निर्भर था। परंतु अदार पूनावाला पैदाइशी अरबपति, युवा और तेज-तर्रार, बेदाग, टक्सीडो पहनने वाले, लगजरी कार चलाने वाले तथा लंदन के लिए प्राइवेट जेट लेकर जाने वाले व्यक्ति थे जबकि डॉ. कृष्णा किसान के परिवार से और धरातल से जुड़े रहने वाले एक ऐसे वैज्ञानिक थे जो अपनी मेहनत और धैर्य के बल पर इस मुकाम तक पहुँचे थे। इस समय वैक्सीन विकसित करने की वैश्विक दौड़ चल रही थी जिस पर एक साथ कई दृष्टिकोणों से चिंतन चल रहा था। यह एक ही समय में कई घोटों पर दांव लगाने जैसा था। डॉ. कृष्णा ने महसूस किया कि टीके न केवल सुरक्षित और प्रभावी होनी चाहिए बल्कि व्यावहारिक भी होनी चाहिए। इसका मतलब भंडारण, आदि की दृष्टि से भी आसान एवं प्रभावी होनी चाहिए।

यही कारण था कि mRNA के टीके रस से बाहर थे। एडेनोवायरस टीके शरीर को यह विश्वास दिलाने का छल करते हैं कि कोशिका में प्रवेश करने के लिए वायरस केवल स्पाइक प्रोटीन भेजकर संक्रमण करता है। प्रतिरक्षा प्रणाली एक बार सक्रिय होने के बाद इसे याद रखती है और जब असली वायरस हमला करता है, तो वह हमारी रक्षा करने में सक्षम होता है। परंतु एक गड़बड़ी थी - सुरक्षा पूर्ण नहीं थी, कम से कम शुरुआती चरणों में जब उन्होंने चिम्पांजी पर परीक्षण किया था। डॉ. कृष्णा ने एक वेक्टर के रूप में संशोधित रेबीज वायरस के विचार के साथ खिलवाड़ किया, लेकिन यह कारगर नहीं हुआ। विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, जहां से उन्होंने शिक्षा पाई और थॉमस जैफरसन इंस्टीट्यूट के साथ उनकी परियोजनाओं ने भी बहुत अधिक परिणाम नहीं दिए।



जब बाकी दुनिया अत्याधुनिक mRNA तकनीक की ओर जाने लगी, तो डॉ. कृष्णा ने पुराने रास्ते पर जाने का फैसला किया। कभी-कभी ओल्ड ही गोल्ड होता है और उन्होंने इस सिद्धांत पर आईसीएमआर के सहयोग से विकसित मरे हुए वायरस वैक्सीन के साथ परीक्षण करना प्रारंभ किया। शुरुआत में चूहों और गिनी पिग में और फिर मनुष्यों में। पहले और दूसरे चरण के परीक्षणों में कई संघर्ष हुए क्योंकि यह समय के विरुद्ध दौड़ थी। कोरोना लोगों के प्राण ले रही थी। पिछले टीके पर लंबे समय तक शोध हुआ था। सभी के मन में यही प्रश्न घुमड़ रहे थे कि क्या कोवैक्सिन काम करेगी? क्या यह सुरक्षित रहेगा?

भारत के वायरोलॉजिस्ट की मदद से उन्होंने टेस्टिंग फेज़ को छोटा कर दिया। उन्होंने स्वयंसेवकों को टीका दिया और 28 दिनों में उनके रक्त का नमूना लिया गया। घातक वायरस के साथ एक उच्च जैव सुरक्षा प्रयोगशाला में इसका परीक्षण किया गया। यदि टीका काम करता है, तो रक्त के नमूने में एंटीबॉडी वायरस को बेअसर कर देंगे और कोई वृद्धि नहीं होगी। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा जब टीके ने शानदार ढंग से काम किया। आखिरकार उन्होंने एक ऐसी वैक्सीन ईजाद कर ली, जो 'मेड इन इंडिया' थी, लेकिन दुनिया के लिए बनी थी।

कोवैक्सीन का जन्म हुआ -

आश्चर्यजनक रूप से, कृष्णा एल्ला ने सरकार से एक रुपये लिए बिना इसे हासिल किया था। मानव परीक्षण में आगे और भी संघर्ष थे। महामारी ने एक आभासी कोलाहल पैदा कर दिया था, जिसे सोशल मीडिया ने एक लाख गुना बढ़ा दिया था - हर टॉम, डिक और हैरी ने हर चरण में टीके के बारे में संदेह जताया। भारतीय नियामक प्राधिकरण समझदार थे - उन्होंने इस प्रक्रिया को तेज कर दिया। भारत वैक्सीन विकसित करने वाला दुनिया का तीसरा देश बन गया। वैक्सीन मैत्री पहल से इसने कई देशों को वैक्सीन दी। यह एक अविश्वसनीय उपलब्धि थी। 60 के दशक में, राष्ट्रपति केनेडी ने घोषणा की थी कि अमेरिका एक दशक के भीतर मनुष्य को चंद्रमा पर भेजेगा - भले ही कोई नहीं जानता था कि कैसे? इसे "मूनशॉट" के रूप में जाना जाने लगा। कोवैक्सीन भारत का "मूनशॉट" क्षण या शायद एक "कोरोशॉट" क्षण है, जिसे एक दशक में नहीं, बल्कि एक साल के भीतर हासिल किया गया। यह एक अदृश्य शत्रु के विरुद्ध युद्ध में हमारी अपनी सफलता थी। इस जीत का फल सबसे गरीब देशों के साथ बांटा गया।

लोग कहते हैं, देखने से ही विश्वास होता है। महापुरुष इस कहावत को उलट देते हैं। वे इतनी तीव्रता से विश्वास करते हैं कि वह जीवंत हो उठता है और वह दिखने लगता है जैसा विश्वास किया जाता है। विश्वास से ही देखा जा सकता है। जैसा कि मैंने यह लिखा है, मुझे एक तमिल फिल्म सोरारई पोटरू याद है, जो एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने आसमान का सपना देखा था। डॉ. कृष्णा एल्ला की कहानी और भी दुस्साहसी है। यह कहानी बताती है कि कैसे तिरुथानी के एक किसान का बेटा वैज्ञानिक बन गया और हमारे जीवन की सबसे बड़ी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हो गया। यह इस बात की भी कहानी है कि कैसे भारत एक दर्शक या तमाशाई से एक वैक्सीन महाशक्ति के रूप में रूपांतरित हुआ।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जयंती मनाई गई

दिनांक 21.02.2023 को राजभाषा विभाग, रायपुर द्वारा मंडल कार्यालय स्थित जयशंकर प्रसाद हिंदी पुस्तकालय में हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जयंती मनाई गई। सर्वप्रथम श्री प्रवीण कुमार, सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर द्वारा महाकवि निराला के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।



तत्पश्चात श्री निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी एवं विभिन्न विभागों से उपस्थित कर्मचारियों ने भी उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित कर्मचारियों द्वारा 'निराला' जी की प्रसिद्ध कविताओं का पाठ किया गया। कुछ कर्मचारियों द्वारा स्वरचित कविताओं का भी पाठ किया गया।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे पर्यावरण संरक्षण एवं ईंधन की बचत की ओर अग्रसर

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में हेड ऑन जनरेशन (एचओजी) प्रणाली की स्थापना से वर्तमान वित्तीय वर्ष के 10 महीनों में 34 लाख लीटर से भी अधिक डीजल की बचत की गई है। अत्याधुनिक 'हेड ऑन जेनरेशन' (एचओजी) प्रौद्योगिकी को अपनाने के साथ ही दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की 19 ट्रेनें हरित यानी ग्रीन ट्रेन हो गई हैं। अब ये ट्रेनें मंहगे डीजल ईंधन को जलाने की बजाय ओवर हेड उपकरण (ओएचई) के माध्यम से सीधे ग्रिड से बिजली ले रही हैं।

एचओजी एक ऐसी प्रणाली है जो इंजन से सीधे इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन पावर केबल की शक्ति का उपयोग करके प्रकाश और एयर कंडीशनिंग के लिए कोचों को विद्युत आपूर्ति करती है। एलएचबी आधारित ट्रेनों के कोचों के लिए विद्युत उत्पादन के सबसे आम तरीके को एंड ऑन जेनरेशन (ईओजी) कहा जाता है। प्रत्येक एलएचबी गाड़ियों पर कोचों को विद्युत आपूर्ति करने के लिए डीजल इंजन ले जाने वाली पावर कार के दो सेट होते हैं जिसमें कोच में लाइट और एयर कंडीशनिंग के लिए बिजली की आपूर्ति ट्रेन के दोनों सिरों पर लगाए गए विद्युत कारों में उपलब्ध डीजल जनरेटर सेट के माध्यम से की जाती है। अब इन सभी 19 ट्रेनों में इंजन के माध्यम से ओवर हेड उपकरण (ओएचई) से विद्युत की सप्लाई की जा रही है।

ट्रेनों में एचओजी प्रणाली के निम्नलिखित लाभ हैं : डीजल की नगण्य खपत के परिणामस्वरूप करोड़ों रुपये से भी अधिक मूल्य की डीजल की वार्षिक बचत होती है। डीजल जलने से होने वाले वायु प्रदूषण को इस प्रणाली के तहत कम किया जा रहा है। ट्रेनों में उच्च क्षमता वाले डीजल जनरेटर से होने वाले ध्वनि प्रदूषण का उन्मूलन करना यात्रियों की सुविधाओं में वृद्धि करना है। रेलवे ने छोटी इंजन वाली नई प्रकार की पावर कारों का निर्माण शुरू कर दिया है। यह डीजल की न्यूनतम खपत के कारण संभव हो पाया है। फलतः इसमें जो स्थान भारी इंजनों के लिए आरक्षित रहता है, वह अब सामान्य वर्ग के बैठने के लिए उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार ट्रेनों में यात्रियों के लिए बैठने की क्षमता में वृद्धि हुई है। डीजल जनरेटर से तेल और जनरेटर के अन्य खतरनाक ज्वलनशील उपकरणों को पृथक करने के कारण आग के खतरों में कमी हुई है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा शुरू की गई यह एचओजी प्रणाली के उपर्युक्त लाभों के कारण भारत में स्वच्छ, शांत और सुविधाजनक रेल परिवहन के लिए एक सहायनीय पहल है।

राजभाषा नियम 1976 : महत्त्वपूर्ण तथ्य

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में राजभाषा नियम, 1976 का जारी किया जाना एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इस नियम की कुछ महत्त्वपूर्ण व्यवस्थाएँ इस प्रकार हैं :

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से 'क' क्षेत्र में स्थित किसी राज्य को या ऐसे राज्यों में स्थित किसी अन्य कार्यालय या कोई व्यक्ति जो वहाँ रह रहा हो, को भेजे जाने वाले पत्र आदि हिन्दी में भेजे जाएँगे। यदि किसी विशेष मामले में ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तब उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से 'ख' क्षेत्र में स्थित किसी राज्य को भेजे जाने वाले पत्र आदि सामान्यतः हिन्दी में भेजे जाएँगे। यदि ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा। इन राज्यों में रहने वाले किसी व्यक्ति को हिन्दी या अंग्रेजी किसी भाषा में पत्र भेजे जा सकते हैं। वार्षिक कार्यक्रम में किए गए प्रावधानों के अनुसार 'ख' क्षेत्र के लोगों को भी पत्रादि हिन्दी में भेजे जाने अपेक्षित हैं।
3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से 'ग' क्षेत्र में स्थित किसी राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के किसी भी कार्यालय को या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाएँगे। यदि ऐसा कोई पत्र हिन्दी में भेजा जाता है तो उसका अंग्रेजी अनुवाद भी साथ भेजा जाएगा।
4. केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्र-व्यवहार हिन्दी या अंग्रेजी में किया जा सकता है। किन्तु केन्द्र सरकार के किसी मंत्रालय / विभाग और 'क' क्षेत्र में स्थित सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों के बीच होने वाला पत्र-व्यवहार सरकार द्वारा निर्धारित अनुपात में हिन्दी में होगा।
5. हिन्दी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही दिए जाएँगे। हिन्दी में लिखे या हिन्दी में हस्ताक्षरित किए गए आवेदनों, अपीलों या अभ्यावेदनों के उत्तर भी हिन्दी में दिए जाएँगे।
6. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) में निर्दिष्ट दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा और इसे सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की होगी।
7. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी फाइलों में हिन्दी या अंग्रेजी की टिप्पणी या कार्यवृत्त लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में भी प्रस्तुत करे।
8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से सम्बन्धित सभी मैनुअल, संहिताएँ और अन्य प्रक्रिया साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में द्विभाषिक रूप में तैयार और प्रकाशित किए जाएँगे। सभी फार्मों और रजिस्ट्रों के शीर्ष, नाम-पट्ट, मुहरें, स्टेशनरी आदि की अन्य मंदा भी हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में होंगी।
9. प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह दायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करे और अपने कार्यालय में उपयुक्त और प्रभावकारी जाँच-बिन्दु बनवाए।

- हिन्दी की एक निश्चित धारा है, निश्चित संस्कार है। – जैनेन्द्रकुमार
- हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है। – माखनलाल चतुर्वेदी
- हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। – स्वामी दयानंद

जनवरी माह के साहित्यकार - जयशंकर प्रसाद

जन्म : 30 जनवरी 1889

निधन : 15 नवंबर 1937

जन्म स्थान : वाराणसी, उत्तरप्रदेश

प्रमुख कृतियाँ : झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय का नाग यज्ञ, राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घूँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र, प्रायश्चित, सज्जन, छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल, कंकाल, तितली और इरावती।

विविध : 'कामायनी' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक



सब जीवन बीता जाता है

सब जीवन बीता जाता है
धूप छाँह के खेल सदृश
सब जीवन बीता जाता है

समय भागता है प्रतिक्षण में,
नव-अतीत के तुषार-कण में,
हमें लगा कर भविष्य-रण में,
आप कहाँ छिप जाता है
सब जीवन बीता जाता है

बुल्ले, नहर, हवा के झोंके,
मेघ और बिजली के टोंके,
किसका साहस है कुछ रोके,
जीवन का वह नाता है
सब जीवन बीता जाता है

वंशी को बस बज जाने दो,
मीठी मीड़ों को आने दो,
आँख बंद करके गाने दो
जो कुछ हमको आता है

सब जीवन बीता जाता है।

झरना/ हृदय का सौंदर्य

नदी की विस्तृत वेला शान्त,
अरुण मंडल का स्वर्ण विलास;
निशा का नीरव चन्द्र-विनोद,
कुसुम का हँसते हुए विकास।

एक से एक मनोहर दृश्य,
प्रकृति की क्रीड़ा के सब छंद;
सृष्टि में सब कुछ हैं अभिराम,
सभी में हैं उन्नति या हास।

बना लो अपना हृदय प्रशान्त,
तनिक तब देखो वह सौन्दर्य;
चन्द्रिका से उज्ज्वल आलोक,
मल्लिका-सा मोहन मृदुहास।

अरुण हो सकल विश्व अनुराग
करुण हो निर्दय मानव चित्त;
उठे मधु लहरी मानस में
कूल पर मलयज का हो वास।

लहर / ले चल वहाँ भुलावा देकर

ले चल वहाँ भुलावा देकर
मेरे नाविक! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अम्बर के कानों में गहरी,
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो-
तज कोलाहल की अवनी रे।
जहाँ साँझ-सी जीवन-छाया,
ढीली अपनी कोमल काया,
नील नयन से दुलकाती हो-
ताराओं की पाँति घनी रे।

जिस गम्भीर मधुर छाया में,
विश्व चित्र-पट चल माया में,
विभुता विभु-सी पड़े दिखाई-
दुख-सुख बाली सत्य बनी रे।

श्रम-विश्राम क्षितिज-वेला से
जहाँ सृजन करते मेला से,
अमर जागरण उषा नयन से
बिखराती हो ज्योति घनी रे

फरवरी माह के साहित्यकार - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

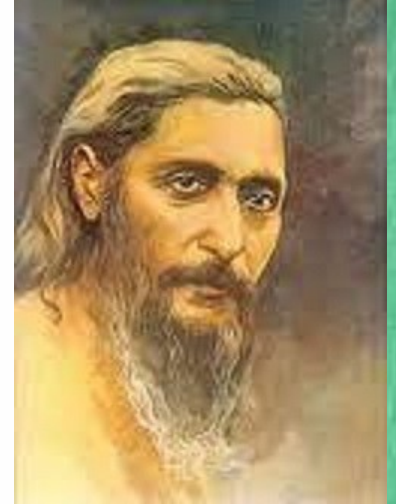
जन्म : 21 फरवरी 1899

निधन : 15 अक्टूबर 1961

जन्म स्थान : मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल

प्रमुख कृतियाँ : परिमल, बादल राग, भिक्षुक, विधवा, अनामिका, पंचवटी प्रसंग, तुम और मैं, जूही की कली, राम की शक्ति पूजा, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति, सरोज स्मृति, अपरा, बेला, आराधना, तोड़ती पत्थर, दान, नए पत्ते, अणिमा, कुरुरमुत्ता तथा अर्चना ।

विविध : 'छायावाद' के प्रमुख स्तंभ



भारती वन्दना

भारति, जय, विजय करे
कनक-शस्य-कमल धरे!
लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण-युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे!
तरु-तण वन-लता-वसन
अंचल में खचित सुमन
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल-धार हार लगे!
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण प्रणव ओंकार
ध्वनित दिशाएँ उदार
शतमुख-शतरव-मुखरे!

गीत गाने दो मुझे

गीत गाने दो मुझे तो,
वेदना को रोकने को ।
चोट खाकर राह चलते
होश के भी होश छूटे,
हाथ जो पाथेय थे,
ठग-ठाकुरों ने रात लूटे,
कंठ रूकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो ।
भर गया है ज़हर से
संसार जैसे हार खाकर,
देखते हैं लोग लोगों को,
सही परिचय न पाकर,
बुझ गई है लौ पृथा की,
जल उठो फिर सींचने को ।

कुंज-कुंज कोयल बोली है

कुंज-कुंज कोयल बोली है,
स्वर की मादकता घोली है ।

कांपा है घन पल्लव-कानन,
गूँजी गुहा श्रवण-उन्मादन,
तने सहज छादन-आच्छादन,
नस ने रस-वशता तोली है ।

गृह-वन जरा-मरण से जीकर
प्राणों का आसव पी-पीकर
झरे पराग-गन्ध-मधु-शीकर,
सुरभित पल्लव की चोली है ।

तारक-तनु रवि के कर सिंचित,
नियमित अभिसारक जीवित सित,
आमद-पद-भर मंजु-गुंजरित
अलिका की कलिका डोली है ।

पाठकों की प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं । कृपया अपने सुझाव व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल rbarsecr2006@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें । यह ई-पत्रिका द.पू.म.रेलवे की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है ।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार ।